ये अव्यक्त इशारे

# कर्मयोगी बनो

*5-06-2024*

कर्म अर्थात् व्यवहार, योग अर्थात् परमार्थ। परमार्थ अर्थात् परमपिता की सेवा अर्थ। तो व्यवहार और परमार्थ दोनों साथ-साथ रहें इसको कहा जाता है श्रीमत् पर चलने वाले कर्मयोगी। मैं सिर्फ व्यवहारी नहीं लेकिन व्यवहारी और परमार्थी अर्थात् जो कर रहा हूँ, वह ईश्वरीय सेवा अर्थ कर रहा हूँ। इस स्मृति से एक ही तन द्वारा एक ही समय मन और धन की डबल कमाई होती रहेगी।

# Be a karma yogi.

Karma means relationship (interaction), yoga means 'in the name of God'. 'In the name of God' means doing the service of the Supreme Father. So, let the interaction and doing something in the name of God both be together. This is known as being a karma yogi who is following shrimat. I am not a soul who just interacts, but one who interacts with others and also does everything in the name of God, that is, whatever I am doing, I am doing for God's service. With this awareness, with the one body, at one time, I will be earning a double income with the mind and wealth.